DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU — Muzaffarpur

B.A. (Hons.), Part — I
Sub. — SANSKRIT
Paper — I
कारक सूत्र-व्याख्या
(द्वितीया विभक्ति)

5×3 = 15 Marks

8. अभितः परितः समया - निकषा हा प्रतियोगेऽपि (वार्तिक-12)

व्याख्या → अभितः, परितः, समया, निकषा, हा और प्रति शब्दों के योग में भी द्वितीया हो - यह सूत्रार्थ है। यथा - अभितः कृष्णम् - यहाँ 'अभितः' के योग में द्वितीया हुई है। अभितः पीतः 0 - वार्तिक से ~~द्वितीया~~ कृष्णम् परितः कृष्णम्। ग्रामं समया (समीप) निकषा वा। हा कृष्णाऽभक्तम्। बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित् - यहाँ परितः, समया, निकषा, हा और प्रति के योग में क्रमशः कृष्णम्, ग्रामम्, ~~[illegible]~~ कृष्णाऽभक्तम्, एवं बुभुक्षितम् आदि में द्वितीया विभक्ति हुई है।

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

9. साधकतमं करणम् (1/4/42)

व्याख्या → क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त उपकारक हो, उसकी करण संज्ञा हो अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सर्वाधिक सहायक हो, उसे करण कारक कहते हैं और उस करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा —

रामः बाणेन रावणं हतवान्।
कृष्णः मुष्टिकैः चाणूरं हतवान्।
गोपालः लेखन्या पत्रं लिखति।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्ता क्रमशः 'रामः', 'कृष्णः' एवं 'गोपालः' के सर्वाधिक सहायक कारक — बाणेन, मुष्टिकैः एवं लेखन्या हैं, अतः इनमें ~~[illegible]~~ उक्त सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है।

———— 0 ————

क्रमशः जारी